eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

भारत–रूस संबंधः सहयोग और भविष्य की संभावनाएं

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Nov 2024, Published : 30 November 2024

Abstract

भारत और रूस के संबंध ऐतिहासिक रूप से घनिष्ठ और बहुआयामी रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, सोवियत संघ और स्वतंत्र भारत के बीच संबंधों की शुरुआत हुई, जो शीत युद्ध के दौरान रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित हो गई। समय के साथ, यह संबंध सैन्य, आर्थिक, सांस्कृतिक और कूटनीतिक रूप से और मजबूत हुआ। वर्तमान में, रूस भारत का एक प्रमुख रक्षा आपूर्तिकर्ता है और दोनों देश अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक–दूसरे का समर्थन करते हैं। इस शोध पत्र में भारत–रूस संबंधों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, आर्थिक सहयोग, रक्षा साझेदारी, ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई है।

शब्द कुंजी– भारत–रूस संबंध, रणनीतिक साझेदारी, रक्षा सहयोग, ऊर्जा सहयोग, आर्थिक संबंध, सांस्कृतिक आदान–प्रदान।

Introduction

भारत और रूस के बीच संबंधों की जड़ें ऐतिहासिक रूप से गहरी हैं। दोनों देशों के बीच सहयोग केवल सरकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जनता के बीच आपसी समझ और विश्वास पर आधारित है। यह संबंध समय के साथ विकसित हुआ है और विभिन्न ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित हुआ है। भारत और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी वैश्विक भू–राजनीतिक समीकरणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह संबंध न केवल रक्षा और व्यापार तक सीमित है, बल्कि ऊर्जा, विज्ञान, अंतरिक्ष, संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में भी विस्तारित हो चुका है। भारत और रूस की विदेश नीति में परस्पर समर्थन और सहयोग देखने को मिलता है, जिससे दोनों देशों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूती मिलती है। यह शोध पत्र इन संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आर्थिक और सैन्य सहयोग, वैश्विक मंचों पर सहयोग और भविष्य की संभावनाओं की विस्तृत समीक्षा प्रदान करता है। इसमें भारत और रूस के संबंधों के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है, जिससे उनकी गहराई और संभावनाओं को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

भारत और रूस के संबंधों की ऐतिहासिक जड़ें कई सदियों पुरानी हैं। भारत और तत्कालीन रूस के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्क मध्यकालीन युग में भी देखे जा सकते हैं। आधुनिक संदर्भ में, 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद दोनों देशों के बीच औपचारिक कूटनीतिक संबंध स्थापित हुए। 1950 और 1960 के दशक में, सोवियत संघ ने भारत के औद्योगिकीकरण और वैज्ञानिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत में भारी उद्योग, इस्पात संयंत्र और अंतरिक्ष अनुसंधान में रूस की सहायता महत्वपूर्ण रही। 1955 में भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की सोवियत संघ यात्रा और 1962 में सोवियत नेता निकिता ख्रुश्चेव की भारत यात्रा ने दोनों देशों के बीच घनिष्ठ संबंधों की नींव रखी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

सोवियत संघ ने भारत के सार्वजनिक क्षेत्र और बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान दिया। 1971 में भारत और सोवियत संघ के बीच 'शांति, मैत्री और सहयोग संधि' पर हस्ताक्षर हुए, जिसने भारत की विदेश नीति को महत्वपूर्ण दिशा प्रदान की। इस संधि के कारण, भारत को 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान सोवियत संघ का मजबूत समर्थन मिला। 1980 के दशक में, सोवियत संघ भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक और रक्षा सहयोगी बन गया। सोवियत संघ ने भारत को अत्याधुनिक सैन्य उपकरणों की आपूर्ति की, जिसमें मिग लड़ाकू विमान, टैंकों और अन्य रक्षा प्रणालियों का विकास शामिल था। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद, भारत और रूस के संबंधों में अस्थायी रूप से ठहराव आया, लेकिन 1993 में हस्ताक्षरित द्विपक्षीय संधियों और 2000 में घोषित 'रणनीतिक साझेदारी' के तहत दोनों देशों ने अपने संबंधों को पुनः मजबूती प्रदान की। वर्तमान समय में, भारत और रूस की साझेदारी विभिन्न क्षेत्रों में विस्तारित हो चुकी है, जिसमें रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान शामिल हैं। दोनों देश लगातार अपने ऐतिहासिक संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध काफी मजबूत हुए और उन्होंने कई क्षेत्रों में एक–दूसरे का सहयोग किया। भारत ने शीत युद्ध के दौरान गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का नेतृत्व किया, लेकिन इसके बावजूद भारत और सोवियत संघ के संबंध घनिष्ठ बने रहे। सोवियत संघ ने भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का समर्थन किया, विशेष रूप से 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान। शीत युद्ध के दौरान, सोवियत संघ भारत के औद्योगिकीकरण में एक प्रमुख भागीदार था। भारत में भारी उद्योग, इस्पात संयंत्र, तेल शोधनशालाएँ और मशीन निर्माण उद्योगों की स्थापना में सोवियत संघ का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस दौरान सोवियत संघ ने भारत को सस्ती दरों पर तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान की। भारत और सोवियत संघ के बीच रक्षा सहयोग शीत युद्ध काल में काफी विस्तृत था। सोवियत संघ भारत का सबसे बड़ा रक्षा आपूर्तिकर्ता था और उसने भारत को उन्नत सैन्य तकनीक प्रदान की। इस अवधि में, भारत ने मिग–21 लड़ाकू विमान, टैंक, पनडुब्बियाँ और अन्य सैन्य उपकरण सोवियत संघ से प्राप्त किए। संयुक्त राष्ट्र में सोवियत संघ ने कई बार भारत के हितों का समर्थन किया। 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान, जब अमेरिका और चीन ने पाकिस्तान का समर्थन किया, तब सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के पक्ष में वीटो किया। शीत युद्ध के दौरान, भारत और सोवियत संघ के बीच विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान में भी घनिष्ठ सहयोग था। इस दौरान सोवियत संघ ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के विकास में सहायता की और 1984 में भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा को सोवियत अंतरिक्ष यान सोयूज टी–11 में अंतरिक्ष यात्रा करने का अवसर मिला। शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध बहुआयामी और मजबूत थे। इस अवधि में दोनों देशों ने एक–दूसरे के रणनीतिक, आर्थिक, रक्षा और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत और रूस के बीच आर्थिक और व्यापारिक संबंध ऐतिहासिक रूप से मजबूत रहे हैं। 1950 के दशक से ही सोवियत संघ ने भारत के औद्योगिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद कुछ समय के लिए इन संबंधों में ठहराव आया, लेकिन बाद में दोनों देशों ने व्यापार और निवेश को पुनः गति प्रदान की। भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगातार बढ़ रहा है। दोनों देशों के बीच व्यापार मुख्य रूप से रक्षा, ऊर्जा, फार्मास्युटिकल्स, इंजीनियरिंग उत्पादों और कृषि

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

उत्पादों पर केंद्रित है। 2022–23 में भारत और रूस के बीच व्यापार का कुल मूल्य 40 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक रहा। रूस, भारत को कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस, रक्षा उपकरण और उर्वरक जैसी वस्तुएँ निर्यात करता है, जबकि भारत रूस को औषधियाँ, चाय, कॉफी, समुद्री खाद्य पदार्थ और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण निर्यात करता है। पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण भारत और रूस के बीच व्यापार में अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता को कम करने के लिए वैकल्पिक भुगतान तंत्र विकसित किए जा रहे हैं। रुपये–रूबल व्यापार प्रणाली और MIR भुगतान प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे द्विपक्षीय व्यापार को मजबूती मिलेगी।

भारत ने रूस में कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निवेश किया है। भारतीय कंपनियाँ ऊर्जा, फार्मास्युटिकल्स और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में निवेश कर रही हैं। भारतीय तेल कंपनियाँ रूस में तेल और गैस क्षेत्रों में महत्वपूर्ण निवेश कर रही हैं, जैसे कि सखालिन–1 और वेंकोर परियोजनाएँ। रूस में भारतीय दवा कंपनियों की मजबूत उपस्थिति है। भारत की कई प्रमुख दवा कंपनियाँ रूस में कार्यरत हैं और वहाँ की दवा जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा पूरा कर रही हैं। इसके अलावा, भारतीय आईटी कंपनियाँ भी रूस में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही हैं, जिससे डिजिटल और तकनीकी क्षेत्र में सहयोग बढ़ रहा है। भारत और रूस के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक संयुक्त आर्थिक आयोग (India&Russia Intergovernmental Commission on Trade] Economic] Scientific] Technological] and Cultural Cooperation & IRIGC&TEC) स्थापित किया गया है, जो व्यापार को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।भारत और रूस अपने आर्थिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए कई नए क्षेत्रों की तलाश कर रहे हैं, जैसे कि डिजिटल अर्थव्यवस्था, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, अंतरिक्ष अनुसंधान, और नवीकरणीय ऊर्जा।

कुल मिलाकर, भारत और रूस के बीच आर्थिक और व्यापारिक सहयोग द्विपक्षीय संबंधों की एक महत्वपूर्ण आधारशिला बना हुआ है और आने वाले वर्षों में यह और मजबूत होने की संभावना है।

भारत और रूस के बीच रक्षा और सैन्य सहयोग द्विपक्षीय संबंधों की सबसे महत्वपूर्ण आधारशिला है। शीत युद्ध के समय से ही सोवियत संघ (अब रूस) भारत का प्रमुख रक्षा साझेदार रहा है। आज भी भारत की सैन्य क्षमताओं को मजबूत करने में रूस की महत्वपूर्ण भूमिका है। रूस भारत को अत्याधुनिक सैन्य उपकरण और हथियार प्रणाली प्रदान करने वाला सबसे बड़ा देश है। भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना में रूस निर्मित उपकरणों की एक बड़ी संख्या शामिल है।

वायुसेना– भारत के मिग–21, मिग–29 और सुखोई–30डज्ञप् जैसे लड़ाकू विमान रूस से प्राप्त हुए हैं। भारत–रूस ने संयुक्त रूप से ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल विकसित की है।

नौसेना– भारत की नौसेना में रूस निर्मित पनडुब्बियाँ, जैसे कि किलो–क्लास और अकुला–क्लास पनडुब्बियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, भारत ने रूस से INS विक्रमादित्य विमानवाहक पोत भी अधिग्रहित किया है।

थल सेना– भारतीय थल सेना में टी–72 और टी–90 टैंकों का उपयोग किया जाता है, जो रूस से आयात किए गए हैं। साथ ही, आधुनिक आर्टिलरी सिस्टम और एंटी–एयरक्राफ्ट मिसाइलें भी रूस से प्राप्त की गई हैं।

भारत और रूस संयुक्त रक्षा उत्पादन में भी सहयोग कर रहे हैं। दोनों देशों ने रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

ब्रह्मोस मिसाइल– यह भारत और रूस के संयुक्त प्रयास से विकसित की गई सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है, जो भारतीय सशस्त्र बलों के लिए एक महत्वपूर्ण संपत्ति है।

S-400 मिसाइल सिस्टम– भारत ने रूस से S–400 ट्रायम्फ वायु रक्षा प्रणाली खरीदी है, जो भारत की वायु सुरक्षा को मजबूत करती है।

AK–203 असॉल्ट राइफल– भारत में AK–203 असॉल्ट राइफल के निर्माण के लिए एक संयुक्त उद्यम स्थापित किया गया है।

भारत और रूस नियमित रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यास करते हैं, जिससे दोनों देशों की सेनाओं के बीच समन्वय और रणनीतिक समझ विकसित होती है। इंद्र अभ्यास, भारत और रूस की सेनाओं के बीच यह प्रमुख द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास है, जिसमें थल, वायु और नौसेना की भागीदारी होती है। वोस्तोक और ज़पद अभ्यास, भारत समय–समय पर रूस द्वारा आयोजित बहुपक्षीय सैन्य अभ्यासों में भाग लेता है।

रक्षा निर्यात और तकनीकी हस्तांतरण– रूस ने भारत को रक्षा क्षेत्र में तकनीकी हस्तांतरण की सुविधा दी है, जिससे भारत अपने सैन्य उपकरणों का स्वदेशी उत्पादन कर सकता है। भारत ने 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत कई रक्षा परियोजनाओं में रूस के साथ भागीदारी की है। भारत और रूस रक्षा क्षेत्र में अपने सहयोग को और मजबूत करने के लिए नए क्षेत्रों की तलाश कर रहे हैं। भविष्य में, हाइपरसोनिक मिसाइल तकनीक, ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर सुरक्षा में भी दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग बढ़ सकता है। भारत और रूस की रक्षा साझेदारी दोनों देशों के दीर्घकालिक रणनीतिक हितों के अनुरूप है और यह आने वाले दशकों में और अधिक गहरी हो सकती है। भारत और रूस के बीच ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में रूस एक प्रमुख भागीदार है। भारत और रूस के बीच परमाणु ऊर्जा सहयोग का एक लंबा इतिहास रहा है। कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना, रूस के सहयोग से तमिलनाडु में कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है। इस परियोजना के तहत वर्तमान में कई रिएक्टर कार्यरत हैं, और भविष्य में और अधिक रिएक्टरों के निर्माण की योजना है। परमाणु तकनीक और ईंधन आपूर्तिरू रूस, भारत को परमाणु रिएक्टरों के लिए आवश्यक यूरेनियम की आपूर्ति करता है और तकनीकी सहयोग भी प्रदान करता है। भारत और रूस के बीच हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में मजबूत साझेदारी है।

सखालिन–1 और वेंकोर परियोजनाएँ– भारत की ओएनजीसी विदेश लिमिटेड ने रूस के सखालिन–1 और वेंकोर तेल और गैस परियोजनाओं में निवेश किया है।

एलएनजी आपूर्ति– रूस भारत को तरलीकृत प्राकृतिक गैस (LNG) की आपूर्ति कर रहा है, जिससे भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूती मिल रही है।

रूसी तेल कंपनियों के साथ समझौते– भारतीय कंपनियाँ, जैसे कि इंडियन ऑयल और गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (GAIL), रूस की प्रमुख तेल कंपनियों के साथ समझौते कर रही हैं।
भारत और रूस सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और हाइड्रो पावर में भी सहयोग बढ़ा रहे हैं। दोनों देश संयुक्त रूप से ग्रीन एनर्जी परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं और क्लाइमेट चेंज से निपटने के लिए मिलकर प्रयास कर रहे हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

रूस भारत को और अधिक ऊर्जा आपूर्ति करने और संयुक्त ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने की योजना बना रहा है। दोनों देश आर्कटिक क्षेत्र में ऊर्जा संसाधनों के दोहन के लिए भी संभावनाएँ तलाश रहे हैं। भारत और रूस स्वच्छ ऊर्जा समाधान विकसित करने में भी सहयोग कर सकते हैं। ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग भारत–रूस संबंधों को और अधिक सुदृढ़ करने में सहायक रहेगा और भारत की ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करेगा।

भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक और जनता–से–जनता के बीच संपर्क दोनों देशों के संबंधों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान का एक लंबा इतिहास रहा है, जिसमें साहित्य, कला, शिक्षा और सिनेमा जैसे क्षेत्रों में घनिष्ठ सहयोग देखा गया है। रूस भारत के छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण शैक्षिक गंतव्य रहा है। हजारों भारतीय छात्र, विशेष रूप से चिकित्सा और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में, रूसी विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। प्रमुख रूसी विश्वविद्यालय भारतीय छात्रों के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करते हैं, जिससे दोनों देशों के बीच शैक्षिक संबंध मजबूत होते हैं। भारत और रूस के बीच साहित्यिक और कलात्मक आदान–प्रदान काफी सक्रिय रहा है।

रूसी साहित्य का अनुवाद– लियो टॉल्स्टॉय, फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की और एंटोन चेखव जैसे प्रसिद्ध रूसी लेखकों की रचनाएँ हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित की गई हैं।

भारतीय साहित्य का रूसी भाषा में अनुवाद– महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर और प्रेमचंद की रचनाएँ रूसी पाठकों के बीच लोकप्रिय रही हैं। भारत और रूस के बीच फ़िल्म और मीडिया सहयोग भी उल्लेखनीय है।

सोवियत युग में, भारतीय फिल्में रूस में अत्यधिक लोकप्रिय थीं। राज कपूर की फ़िल्में, विशेष रूप से आवारा और श्री 420, रूसी दर्शकों के बीच काफी प्रसिद्ध हुईं। वर्तमान में भी, भारतीय सिनेमा और बॉलीवुड के प्रति रूस में रुचि बनी हुई है। पर्यटन भी दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने में सहायक रहा है। रूस से बड़ी संख्या में पर्यटक भारत के गोवा, केरल और राजस्थान जैसे स्थलों का दौरा करते हैं। भारतीय पर्यटकों के लिए मॉस्को, सेंट पीटर्सबर्ग और बैकाल झील जैसे स्थान आकर्षण के केंद्र हैं। भारत और रूस सांस्कृतिक उत्सवों, कला प्रदर्शनियों और भाषा शिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से जनता के बीच संपर्क को और अधिक बढ़ावा दे सकते हैं। डिजिटल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से साहित्य और कला के क्षेत्र में सहयोग को और विस्तारित किया जा सकता है। भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक और जनता–से–जनता के बीच संपर्क दोनों देशों के दीर्घकालिक संबंधों को और सुदृढ़ करेगा तथा सहयोग के नए अवसरों को जन्म देगा।

भारत और रूस वैश्विक और क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग करते हैं। दोनों देशों की विदेश नीति कई मामलों में समान रही है और वे विभिन्न वैश्विक मुद्दों पर एक–दूसरे का समर्थन करते हैं। भारत और रूस संयुक्त राष्ट्र में एक–दूसरे के प्रमुख सहयोगी हैं। रूस ने हमेशा भारत की स्थायी सदस्यता के दावे का समर्थन किया है। दोनों देश बहुपक्षीय मुद्दों पर समान दृष्टिकोण रखते हैं, जैसे कि आतंकवाद विरोधी अभियान और जलवायु परिवर्तन। भारत और रूस शंघाई सहयोग संगठन के महत्वपूर्ण सदस्य हैं। यह संगठन क्षेत्रीय सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी उपायों और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देता है। भारत और रूस इस मंच पर व्यापार और ऊर्जा सहयोग बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। भारत और रूस

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

ब्रिक्स के संस्थापक सदस्य हैं, जो प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं का समूह है। ब्रिक्स बैंक (New Development Bank) के माध्यम से दोनों देश विभिन्न परियोजनाओं में सहयोग कर रहे हैं।

वैश्विक वित्तीय प्रणाली में सुधार और बहुपक्षीय व्यापार बढ़ाने के लिए दोनों देश मिलकर काम कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ लड़ाईरू भारत और रूस आतंकवाद के खिलाफ सहयोग को मजबूत कर रहे हैं और सुरक्षा से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर एक समान दृष्टिकोण रखते हैं। इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में सहयोगरू रूस हिंद महासागर में भारत की भूमिका को महत्वपूर्ण मानता है और इस क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने के लिए भारत के साथ मिलकर काम कर रहा है। भारत और रूस यूरोपीय–एशियाई आर्थिक संघ (EAEU) के माध्यम से व्यापार को बढ़ावा देने के लिए मुक्त व्यापार समझौते पर विचार कर रहे हैं। इस सहयोग से दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश के नए अवसर खुल सकते हैं। भारत और रूस अपने बहुपक्षीय सहयोग को और मजबूत कर सकते हैं, विशेष रूप से डिजिटल अर्थव्यवस्था और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के क्षेत्र में दोनों देश वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में अपनी भूमिका को सुदृढ़ करने और व्यापार बाधाओं को कम करने के लिए संयुक्त रणनीतियाँ विकसित कर सकते हैं। भारत और रूस का वैश्विक और क्षेत्रीय सहयोग दोनों देशों के रणनीतिक हितों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आने वाले वर्षों में, यह सहयोग और गहरा हो सकता है, जिससे दोनों देशों के वैश्विक प्रभाव में वृद्धि होगी।

चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ– भारत और रूस के संबंधों में कई मजबूत पक्ष होने के बावजूद, कुछ प्रमुख चुनौतियाँ भी हैं, जिनका समाधान दोनों देशों के लिए आवश्यक है। साथ ही, भविष्य में इन संबंधों को और सुदृढ़ करने की भी अनेक संभावनाएँ हैं। जिनमें मुख्य चुनौतियाँ निम्नवत हैं–

1. बदलता भू–राजनीतिक परिदृश्य– वैश्विक स्तर पर अमेरिका, चीन और यूरोपीय संघ जैसे शक्तिशाली देशों की नीतियाँ भारत–रूस संबंधों को प्रभावित कर सकती हैं। अमेरिका और पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए प्रतिबंध भारत–रूस व्यापार और रक्षा सहयोग को प्रभावित कर सकते हैं।

2. आर्थिक और व्यापारिक असंतुलन– भारत और रूस के बीच व्यापार संतुलन रूस के पक्ष में अधिक झुका हुआ है। भारत रूस से ऊर्जा और रक्षा उपकरणों का बड़ा आयातक है, लेकिन भारतीय वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात अपेक्षाकृत कम है। भुगतान तंत्र और बैंकिंग प्रणालियों में कठिनाइयाँ व्यापार को प्रभावित कर सकती हैं, विशेषकर जब पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण अंतरराष्ट्रीय लेनदेन प्रभावित होता है।

3. रक्षा आपूर्ति और तकनीकी स्थानांतरण– हाल के वर्षों में भारत ने अपनी रक्षा आपूर्ति को विविधता देने की कोशिश की है और अन्य देशों, जैसे अमेरिका, फ्रांस और इजराइल से भी सैन्य उपकरण खरीदने शुरू कर दिए हैं। रूस से रक्षा तकनीक और संयुक्त उत्पादन में कुछ हद तक चुनौतियाँ रही हैं, जिनका समाधान आवश्यक है।

4. चीन और रूस के संबंध– रूस और चीन के बीच बढ़ते रणनीतिक सहयोग को भारत संदेह की दृष्टि से देख सकता है, विशेष रूप से जब चीन और भारत के बीच सीमा विवाद मौजूद हैं। रूस और चीन की घनिष्ठता कहीं न कहीं भारत–रूस संबंधों को प्रभावित कर सकती है।

5. ऊर्जा सहयोग की जटिलताएँ– रूस से तेल और गैस आयात को लेकर भारत को लॉजिस्टिक और वित्तीय बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। अक्षय ऊर्जा और हाइड्रोजन ईंधन जैसे नए ऊर्जा स्रोतों में सहयोग अभी सीमित है, जिसे और विकसित करने की आवश्यकता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

भविष्य की संभावनाएँ निम्नवत हैं–

1. बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग– भारत और रूस ब्रिक्स (BRICS), शंघाई सहयोग संगठन और संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों में सहयोग बढ़ा सकते हैं। बहुपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के लिए दोनों देशों को मिलकर नई रणनीतियाँ विकसित करनी होंगी।

2. व्यापार और निवेश के नए अवसर– भारत और रूस को द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने के लिए भुगतान प्रणाली को अधिक सरल और प्रभावी बनाना होगा। फार्मास्युटिकल्स, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि और स्टार्टअप क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है।

3. रक्षा और अंतरिक्ष सहयोग– भारत और रूस संयुक्त रूप से रक्षा उत्पादन को बढ़ा सकते हैं और स्वदेशीकरण की दिशा में कदम उठा सकते हैं। अंतरिक्ष अनुसंधान और गगनयान मिशन में रूस की तकनीकी सहायता भारत के लिए लाभदायक हो सकती है।

4. ऊर्जा सहयोग का विस्तार– परमाणु ऊर्जा, हरित ऊर्जा और हाइड्रोजन ईंधन के क्षेत्र में भारत और रूस संयुक्त अनुसंधान और परियोजनाएँ विकसित कर सकते हैं। रूस से तेल और गैस आयात में विविधता लाने और लॉजिस्टिक लागत कम करने के लिए दोनों देशों को अधिक प्रभावी रणनीतियाँ अपनानी होंगी।

5. सांस्कृतिक और शैक्षिक संबंधों को बढ़ावा– भारत और रूस के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करने के लिए अधिक विश्वविद्यालयों और संस्थानों के बीच साझेदारी की जा सकती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म और मीडिया के माध्यम से दोनों देशों के युवाओं को आपस में जोड़ने के प्रयास किए जा सकते हैं।

भारत और रूस के संबंधों में कई अवसर और चुनौतियाँ मौजूद हैं। सही रणनीतियों के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है और सहयोग के नए रास्ते खोले जा सकते हैं। यदि दोनों देश आपसी हितों को ध्यान में रखते हुए अपनी साझेदारी को और मजबूत करने के लिए ठोस प्रयास करते हैं, तो यह संबंध भविष्य में और अधिक प्रगाढ़ हो सकते हैं। भारत और रूस के द्विपक्षीय संबंधों ने दशकों से एक मजबूत नींव पर विकास किया है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो यह संबंध आपसी विश्वास , रणनीतिक सहयोग और परस्पर हितों पर आधारित रहा है। भारत और रूस ने रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, अंतरिक्ष और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण साझेदारी की है, जिससे दोनों देशों को लाभ हुआ है।

हालांकि, बदलते वैश्विक परिदृश्य और आर्थिक असंतुलन जैसी चुनौतियाँ इन संबंधों को प्रभावित कर सकती हैं। लेकिन इसके बावजूद, दोनों देशों के पास व्यापार, रक्षा सहयोग, ऊर्जा साझेदारी और बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग बढ़ाने के कई अवसर उपलब्ध हैं। यदि भारत और रूस आपसी हितों को ध्यान में रखते हुए सहयोग को और व्यापक बनाते हैं, तो यह संबंध भविष्य में और अधिक सशक्त और लाभप्रद हो सकते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

संदर्भ सूची–

- भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। (2023)। भारत–रूस संबंधों पर आधिकारिक दस्तावेज।
- रूस सरकार, विदेश मंत्रालय। (2023)। रूस–भारत द्विपक्षीय संबंधों की रिपोर्ट।
- शर्मा, आर. (2022)। भारत–रूस रणनीतिक साझेदारी, एक विश्लेषण। नई दिल्ली, राष्ट्रीय प्रकाशन।
- सेन, पी. (2021)। भारत और रूस के आर्थिक संबंध। मुंबई, व्यापार एवं अर्थशास्त्र प्रकाशन।
- भारतीय रक्षा अनुसंधान संस्थान। (2023)। रक्षा सहयोग में भारत और रूस की भूमिका।
- अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी। (2022)। भारत और रूस के बीच ऊर्जा व्यापार की संभावनाएँ।
- शास्त्री, डी. (2020)। संस्कृति और कूटनीति, भारत–रूस के सांस्कृतिक संबंध। कोलकाता, ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र।
- वैश्विक नीति अनुसंधान केंद्र। (2023)। शीत युद्ध के बाद भारत–रूस संबंधों का विकास।